अरी ओ करूणा प्रभामय

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-४)

डॉ. सुरेश चंद्र पाण्डेय

अरी ओ करुणा प्रभामय

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-8)

डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय

अव. प्राप्त रीडर-अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डी.ए.वी.पी.जी कॉलेज

आजमगढ़ (उ.प्र.)

विषय-क्रम

प्रस्तावना	4
पृष्ठभूमि	5
कृति का शीर्षक	6
उपशीर्षक (खण्ड)	7
वस्तु-भाव-विवेचन	9
कविताओं का वर्गीकरण	
1. कवि-कर्म; कविता से संबंधित रचनाएँ :	10
2. जीवन-दृष्टि को प्रकाशित करने वाली	22
3. प्रकृति से संबंधित तथा	44
4. सामाजिक परिदृश्य को उद्घाटित करने वाली रचनाएं।	50
5. अन्य कविताएँ :	54
मूल्यांकन/ निष्कर्ष	
अभिव्यक्ति-विधान	
तद्भव एवं बोली के शब्द/पद	
बिम्ब विधान	
प्रकृति से चुने गए बिम्ब-	
गंध और रंग का मिश्रित बिम्ब	
रंग का बिम्ब	
खेत-खलिहान-कृषि जगत्	

प्रकृति के कुछ और बिम्ब

प्रकाश के बिम्ब

नीरवता, अकेलापन और प्रकाश के मिश्रित बिम्ब

मनोभावों और नश्वरता बोध के बिम्ब

मानव-अंगों के बिम्ब

औद्योगिक सभ्यता/ जीवन के बिम्ब

विशिष्ट पद योजना/ लय युक्त गति

पक्षी-पशु

वनस्पतियाँ-वृक्ष

अरी ओ करुणा प्रभामय

प्रस्तावना :

'अरी ओ करुणा प्रभामय' में कवि की मूल रचनाओं की कुल संख्या 84 है। ये रचनाएँ तीन खण्डों- 'रोपयित्री'; रूप-केकी' तथा द्वारहीन द्वार' में प्रस्तुत की गयी हैं। चौथे खण्ड-'एक चीड़ का खाका' में 27 रचनाएँ हैं, जो जापानी कवियों के अनुवाद हैं।

'अरी ओ करुणा प्रभामय' की मूल 15 रचनाएँ सदानीरा- 1 में तथा 75 रचनाएँ सदानीरा-2 में संकलित हैं। अनुवादों को सदानीरा में स्थान नहीं दिया गया है। इस प्रकार सदानीरा- 1 तथा 2 में 'अरी ओ करुणा प्रभामय' की कुल 90 रचनाएँ संकलित हैं। कविताओं के विवेचन के लिए प्रमुख रूप से सदानीरा के अनुक्रम का यहाँ उपयोग किया गया है।

'अरी ओ करुणा प्रभामय' की पहली रचना 'अच्छा खण्डित सत्य' सदानीरा के किसी खण्ड में नहीं है।

'कवि-कर्म'; चिड़िया ने ही कहा'; 'सरस्वती-पुत्र'; 'पास और दूर'; 'झील का किनारा'; तथा 'अन्तरंग चेहरा' शीर्षक कविताएँ 'सदानीरा' -2 में उपलब्ध हैं; ये रचनाएँ 'अरी ओ करुणा प्रभामय' में नहीं है। इनका रचना-काल सन् 1956 से लेकर सन् 1959 तक है। 'अरी ओ करुणा प्रभामय' की 'ऋतुराज' शीर्षक कविता सन् 1941 की है। इसके बहुत पुरानी होने का उल्लेख अज्ञेय ने 'अरी ओ करुणा प्रभामय' (प्रथम संस्करण) की भूमिका में किया है।

पृष्ठभूमि :

सन्' 57 की गर्मियों में अज्ञेय को जापान जाने का सुयोग मिला था। वहाँ उन्हें जापान की विशेष साधना-पद्धति-ज़ेन (ध्यान) साधना तथा जेन साधकों-कवियों की रचनाओं से गहरा परिचय प्राप्त करने का अवसर मिला। परिणाम स्वरूप; उनकी संवेदना को नए आयाम मिले, समग्रत: करुणा प्रभामय (बुद्ध की महा करुणा) का साक्षात्कार हुआ। अज्ञेय ने इसकी चर्चा 'आत्मने पद' में की है।[1] 'जापान-प्रवास में अज्ञेय को जो अनुभव मिला-प्रकृति से एकात्मकग जेन (ध्यान) साधना, मौन में विराट् का साक्षात्कार और मौन की लय में ही डूब जाना; उसका गहरा प्रभाव 'अरी ओ करुणा प्रभामय' की रचनाओं पर देखा जा सकता है। अज्ञेय लिखते हैं-

'प्रस्तुत संग्रह में अनुवादों को छोड़कर अन्य अनेक कविताओं में भी पूर्व के (और पश्चिम के भी क्यों नहीं) प्रभाव मिलेंगे; लेखक सभी का स्वीकारी है। xx x बन्द घर में प्रकाश पूर्व या पश्चिम या किसी भी निश्चित दिशा से आता है-पर खुले आकाश में वह सभी ओर से समाया रहता है, इसी में उसका आकाशत्व है। उसी खुले आकाश को अपनी बाहों में भर सकें, यह लेखक का स्वप्न रहा है; घरों के मामले में तो वह यायावर ही है।'[2]

---

[1] आत्मने पद पृष्ठ, 54

[2] अरी ओ करूणा प्रभामय (प्र0सं0) भूमिका पृष्ठ, 10

कृति का शीर्षक :

जापान-प्रवास में अज्ञेय पर जापान की ज़ेन साधना और ज़ेन-साधना के उपासक कवियों का गहरा प्रभाव पड़ा। ज़ेन साधना बौद्ध दर्शन का ही एक संप्रदाय है। बौद्ध दर्शन भारत की अपनी चीज़ है और यहीं से बौद्ध दर्शन सुदूर देशों में गया। अज्ञेय 'जापान के ज़ेन बौद्ध संप्रदाय के विचार और साधना पद्धतियों का, और तत्संबंधी साहित्य और वृत्त का भी आभार स्वीकार करते हैं और यह तथ्य रेखांकित करते हैं 'जापानी ज़ेन भारतीय ध्यान का ही रूप है, किन्तु जेन का साहित्य-भंडार आज के भारतीय लेखक के लिए भी कितना स्फूर्तिप्रद है।'[3] इस प्रकार, उक्त प्रभाव के बावजूद, अपनी ही संस्कृति और परंपरा को अज्ञेय नए सिरे से पहचानने की कोशिश करते हैं। इस संग्रह के शीर्षक में ये भाव सन्निहित हैं। इस संग्रह की एक कविता है- 'दीप पत्थर का' जिसमें यह पद 'अरी ओ करुणा प्रभामय' आता है।'[4] सच पूछिये तो 'हे अमिताभ'; 'धरा व्योम'; तथा 'दीप पत्थर, का' शीर्षक कविताएँ महाबुद्ध, जापानी साहित्य, कला और संस्कृति को अज्ञेय की विनम्र श्रद्धांजलि हैं। सारांश यह कि कवि बुद्ध की महा करुणा से, बुद्ध की प्रभा से विस्मय-विभोर हो उठता है और उसकी संवेदना को नयी दिशा मिलती है।

---

[3] वही पृष्ठ, 10

[4] वही पृष्ठ, 83